भाजपा, कांग्रेस और आप की चुनौती

राहुल वर्मा

हिमाचल, गुजरात और एमसीडी चुनावों में तीनों दलों का बहुत कुछ दांव पर है, लेकिन नतीजों से सबसे ज्यादा आप की सियासी सेहत प्रभावित होगी

अवधेश राजपूत

हिमाचल में मतदान हो गया, जबकि गुजरात में विधानसभा और दिल्ली में नगर निगम-एमसीडी चुनाव की सरगर्मी चरम पर है। तीनों जगह भाजपा सत्ता में है, जिसका मुकाबला कांग्रेस और आम आदमी पार्टी यानी आप से है। वैसे तो चुनावों में इन तीनों दलों का बहुत कुछ दांव पर लगा हुआ है, लेकिन यह कहना गलत नहीं होगा कि इन चुनाव के नतीजों से सबसे ज्यादा आप की सियासी सेहत ही प्रभावित होगी। इससे पता चलेगा कि क्या दिल्ली में अरविंद केजरीवाल का जादू कायम है और पंजाब में पार्टी को मिली जीत कोई तुक्का नहीं थी। आप की रणनीति को देखते हुए लगता है कि पार्टी इन नतीजों की महत्ता बखूबी समझती है, क्योंकि राष्ट्रीय राजनीति में उसकी संभावनाओं की राह इन्हीं चुनावों से खुल सकती है। इससे ही पता चलेगा कि आप असल में इंटरनेट मीडिया के गलियारों में सिमटी रहने वाली पार्टी है या फिर देश में उसका राजनीतिक आधार भी विस्तार ले रहा है?

चुनावों को लेकर आप की गंभीरता का अंदाजा इसी रणनीति से लगता है कि पहले वह सभी जगह पूरे दमखम से चुनाव लड़ती दिख रही थी, लेकिन उसने एकाएक हिमाचल से किनारा कर पूरी ताकत गुजरात और दिल्ली में झोंक दी। संभव है कि उसने पुरानी गलतियों से सबक लिया हो। पिछली बार आप गोवा और उत्तराखंड में भी दमखम से लड़ी थी, लेकिन वहां अपेक्षित सफलता न मिलने से उसने सबक लिया कि एक साथ सभी मोर्चों पर उतरना फिलहाल उसके लिए संभव नहीं, क्योंकि पार्टी के पास कुछ ही लोकप्रिय चेहरे हैं और सभी जगह उसका सांगठनिक ढांचा भी मजबूत नहीं। फिर विधानसभा चुनावों के साथ ही दिल्ली के नगर निगम चुनाव ने उसकी दुविधा और बढ़ा दी। व्यावहारिक रूप से देखा जाए तो आप का मुख्य लक्ष्य दिल्ली नगर निगम की सत्ता पर काबिज होना है, जहां लंबे समय से भाजपा टिकी हुई है। वहीं, गुजरात में उसकी कोशिश होगी कि वह किसी तरह कम से कम दूसरे नंबर पर आ जाए, ताकि आगामी चुनाव में खुद को एक कारगर विकल्प के रूप में पेश कर सके। जैसा कि उसने पंजाब में किया था।

आम आदमी पार्टी के लिए सबसे अधिक संभावनाएं दिल्ली में हैं तो उसके साथ ही बड़ी चुनौतियां भी। आप की राजनीतिक यात्रा यहीं से आरंभ हुई और दिल्ली उसका सबसे मजबूत गढ़ भी है। हालांकि विधानसभा में प्रचंड जीत हासिल करने के बावजूद लोकसभा और नगर निगम में पार्टी को यहां राजनीतिक रुतबे के अनुरूप सफलता नहीं मिल पाई। इस बार दिल्ली में तीनों नगर निगमों की व्यवस्था को समाप्त कर एकीकृत नगर निगम के लिए चुनाव हो रहा है। ऐसे में राजनीतिक रुआब के पैमाने पर देखें तो दिल्ली के भावी मेयर की हैसियत राज्य के मुख्यमंत्री जैसी ही होगी। ऐसे में आप किसी भी सूरत में नहीं चाहेगी कि वह इस महत्वपूर्ण चुनाव को गंवा दे, जिसकी वह काफी लंबे समय से तैयारी में लगी थी। यदि पार्टी यहां चुनाव जीतती है तो वह जिसे मेयर बनाएगी, उसे एक प्रकार से राज्य की राजनीति में केजरीवाल के राजनीतिक उत्तराधिकारी के रूप में देखा जाएगा और आप के मुखिया खुद को केंद्रीय राजनीति में अधिक सक्रिय रखेंगे।

पिछली चुनावी असफलताओं से सीख लेने के साथ ही आप ने स्वयं को वैचारिक रूप से भी स्थापित करना आरंभ कर दिया है। वह कुछ वामपंथी झुकाव वाली कांग्रेस के मुकाबले खुद को दक्षिणपंथी झुकाव वाली मध्यमार्गी पार्टी के रूप में पेश कर रही है। एक प्रकार से वह भाजपा के राष्ट्रवाद को चुनौती देने या उससे एक कदम आगे निकलने की होड़ करती दिख रही है। फिर चाहे समान नागरिक संहिता का मुद्दा हो या फिर करेंसी नोटों पर लक्ष्मी-गणेश की तस्वीरों का सुझाव, आप हिंदुओं को यही संदेश देने में लगी है कि उसे हिंदू-विरोधी पार्टी के रूप में न देखा जाए। गुजरात में बिल्किस बानो के मुद्दे ने काफी जोर पकड़ा, लेकिन आप ने उससे किनारा करना ही मुनासिब समझा। इससे पहले कश्मीर के मुद्दे पर भी आप ने भाजपा के रुख का समर्थन किया था। दिल्ली के पिछले विधानसभा चुनाव में केजरीवाल खुद को हनुमान-भक्त बता रहे थे। अमूमन आप को लेकर यही कहा जाता रहा है कि वैचारिक रूप से पार्टी का रवैया बहुत ढुलमुल है तो इस सबके माध्यम से आप यही संदेश देने में जुटी है कि मुख्यधारा के अन्य दलों की तरह उसका भी एक वैचारिक आधार है और वह धार्मिक-सामाजिक से लेकर राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर स्पष्ट रुख रखती है।

आप एक और मोर्चे पर भाजपा के साथ दो-दो हाथ कर रही है। यह मोर्चा है 'रेवड़ी राजनीति' का। बीते दिनों प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जिस रेवड़ी-राजनीति को देश के लिए घातक बताया था, उसके पीछे यही माना गया कि उनका इशारा आप की ओर है। आप जिस तरह चुनाव में मुफ्त सौगातों के वादे करती है, उससे सरकारी योजनाओं को लेकर नई बहस शुरू हो गई है। ऐसे में आप की सफलता से रेवड़ी-राजनीति की बहस और जोर पकड़ेगी। आप सामाजिक समूहों को चिह्नित कर उन्हें लामबंद करने में भी जुटी है। जैसे गुजरात जैसे अपेक्षाकृत समृद्ध राज्य में वह उन गरीबों को लक्षित कर रही है, जो अभी भी कुछ कारणों से पिछड़े हैं। उन्हें मुफ्त योजनाओं के जरिये साधकर पार्टी अपनी पैठ बनाना चाहती है, ताकि उसका एक आधार तैयार हो सके। दिल्ली में मध्यम वर्ग और पंजाब में बड़े किसानों एवं जट सिखों को साधकर आप ने यह सफल प्रयोग किया है।

आप और उसके मुखिया केजरीवाल की राष्ट्रीय महत्वाकांक्षाएं जगजाहिर हैं। पार्टी भले ही कहने को भाजपा और कांग्रेस के बाद इकलौती ऐसी पार्टी है, जिसकी दो राज्यों में सरकार है, मगर राष्ट्रीय राजनीति में इन राज्यों की बड़ी हैसियत नहीं। पंजाब और दिल्ली में लोकसभा की कुल 20 सीटें हैं और यह भी तय नहीं कि आप इन सभी को अपनी झोली में डाल पाएगी। ऐसे में यदि आप को राष्ट्रीय फलक पर अपना विस्तार करना है तो उसके लिए इन चुनावों में अच्छा प्रदर्शन बहुत आवश्यक होगा। इससे केजरीवाल विपक्षी खेमे के मजबूत चेहरे के रूप में उभरेंगे। अन्यथा अपने दायरे में सिमटकर राष्ट्रीय राजनीति में हाशिये पर चले जाएंगे।

(लेखक सेंटर फार पालिसी रिसर्च में फेलो हैं)
response@jagran.com